रहस्यमय बनी हैं नाज्का रेखाएं

नाज्का, पेरू के रेगिस्तानी इलाके में एक जगह। यह जगह जमीन के बेहद सूखे रेगिस्तानों में से एक मानी जाती है। पत्थर तथा बालू से भरी इस मरूभूमि में मीलों तक अजीबोगरीब रेखाएं आकृतियां और डिजाइन बने हैं, जो पिछले ५० से भी अधिक वर्षों से संसार के लिए रहस्य बने हुए हैं। दुनिया के हजारों पुरातत्वविद, खगोलशास्त्री, भूगर्भशास्त्री और गणितज्ञ इस रहस्य को जानने की खोज में लगे हुए है।

इनमें कुछ कोणात्मक डिज़ाइन हैं तो कुछ ज्यामितिक जैसी लगती है। आकृतियों में अनेक पशु पक्षियों के आकार भी हैं। कई रेखाएं सांप की तरह लगती है। इस तरह की रेखाओं को नाज्का रेखाएं कहा जाता है। वैसे पुरानी सभ्यता के अवशेषों की जानकारी पेरू से मिल चुकी है, मगर इन रेखाओं की गुत्थी अभी तक सुलझ नहीं पाई। नाज्का रेखाओं में ऐसे जीव जंतुओं के आकार प्रकार और मनुष्यों की आकृतियां हैं, जिन्हें देखकर लगता है कि यहां सदियों पहले किसी उन्नत सभ्यता का अस्तित्व रहा होगा।

अब तक के अध्ययनकर्ताओं में पहला नाम आता है, ८१ साल की जर्मन गणितज्ञ मारिया रीच का। उन्होंने नाज्का रेखाओं के रहस्य को प्रकट करने में किसी अन्य शोधकर्ता से कई गुना ज्यादा सफलता पाई है। आज भी गणितज्ञ मारिया रीच झुलसाने वाली धूप में छोटी सी प्रयोगशाला के उपकरणों में खोई रहती हैं। दुबली पतली, बूढ़ी मारिया रीच को पेरू की रेगिस्तानी हवाओं के अलावा अब कुछ लोगों से भी मुलाकात हो जाती है।

'अभी भी काफी कुछ जानना बाकी है, क्योंकि कई आकृतियां ठीक-ठीक पढ़ी नहीं जा सकी है।' ये शब्द है मारिया रीच के। उनकी सुविधा के लिए पेरू की सरकार ने आजीवन, भोजन, आवास और शोध के लिए अपेक्षित जरूरतों को पूरा करने का जिम्मा लिया है। मारिया रीच का दावा है कि नाज्का की रेखाएं और आकृतियां भारतीय पूर्वजों ने बनाई है। उनके अनुसार यह बात भारतीयों के दिमाग में तब पहुंचानी चाहिए कि ये रहस्य भारत के प्राचीन सभ्यता की देन हैं, ताकि संसार के सामने पड़े इस सवाल का जवाब ढूंढने की कोशिश हो सके। लेकिन यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि अभी तक भारत सरकार या भारत के पुरातत्वेत्ताओं और भूगर्भ विशेषज्ञों के कानों तक मारिया रीच की आवाज नहीं पहुंची है। जबकि दूसरे देशों के विशेषज्ञ बराबर मारिया रीच की मदद करने नाज्का पहुंच रहे हैं।

नाज्का रेखाएं पेसिफिक सागर में एंडेस पहाड़ी के बीच छह मील चौड़े रेगिस्तान में हैं जो दक्षिणी पेरू और उत्तरी चीले के बीच पड़ता है। नाज्का ने कई भंयकर तूफान और बवंडर झेले। पत्थरों पर खुदी ये रेखाएं और आकृतियां एक साथ काष्ठ कला, कुम्हार कला और पाषण कला के नमूने पेश करती है जो 'इंका' सभ्यता से भी पूर्व की मानी गई हैं। पेरू के इसी इलाके में १००० ईपू के आसपास 'इंका' नामक एक विशाल साम्राज्य का उदय हुआ था।

कुल ३० आकृतियां हैं, जो बड़ी सावधानी और काफी सोच समझकर एक निश्चित योजना से उकेरी गई है। कुछ आकृतियां बंदर के आकार की हैं, दो विशाल मकड़े जैसी हैं। एक उल्लू सरीखे दैत्याकार आदि मानव की है। जानवरों, हाथों, फूलों आदि का बोध कराने वाली आकृतियां भी हैं। अधिकांश जानवरों की आकृतियां १०० से ४०० फुट लंबी हैं। एक गिद्ध जैसा पक्षी ९०० फुट लंबा पाया गया है। सौ से भी ज्यादा रेखाएं तीन मील की दूरी तक फैली हैं और इतनी सीधी हैं कि १९६८ में 'स्मिथसोनियन ऐस्ट्रोफिजिकल आब्जवेटरी टीम' को। मील में मात्र ४ यार्ड का फर्क नजर आया।

रेखाएं पेड़ों की डालियों जैसी हैं। इनकी गहराई ३ से ४ इंच है और चौड़ाई ४ से १८ इंच के बीच। इनकी सतह भूरे पत्थरों से बनी है, नीचे पीली धूल हैं। सदियों से प्राकृतिक आपदाओं को झेलते हुए भी प्राचीन नमूने स्थिर और अविचलित हैं। नाज्का में धूल भरी आंधी और समुद्री तूफान साल में कई कई बार उठते हैं। पत्थरों को भारी लोहे और चिपकन वाले जिप्सस से इस तरह बैठाया गया है कि यह अपनी सदियों पुरानी जगह से टस से मस नहीं हो सकते। गर्म हवा और तपती बालू से अभी तक नाज्का रेखाओं को नुकसान नहीं हो पाया है। बारिश की बौछार से कटाव की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि साल भर में मुश्किल से एक चौथाई इंच बारिश यहां होती है।

नाज्का रेखाओं को सबसे ज्यादा नुकसान लोगों ने पहुंचाया है। १९३९ में अमेरिकी सरकार का ध्यान इस ओर गया। हवाई जहाज उतरने के अड्डे बनाए गए। पत्थरों और शिलाओं को काट कर समतल बनाया गया ताकि कार, जीप आदि वहां पहुंच सके। तमाम तोड़ फोड़ और निर्माण की कार्रवाईयों के दौरान हालांकि पुरातत्व और अंक ज्योतिष शास्त्रों के पहुंचे हुए लोग मौजूद थे। अपनी समझ में इन लोगों ने काफी सावधानी से काम लिया, फिर भी एक वृहद तेंदुए की आकृति को नष्ट होने से नहीं बचाया जा सका।

पेरू के पुरातत्वविदों को सबसे पहले १९२६ में नाज्का रेखाओं का पता चला। पहली बार नाज्का रेखाओं के बारे में संसार को अमेरिकी पुरातत्वशास्त्री पॉल कोसोक ने बताया। वे उन दिनों वाशिंगटन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। इन्होंने हवा की दिशा तय करने वाली कुछ नाज्का जैसी रेखाएं कागज पर उतारीं और खत्म होते ही पाया कि सारी रेखाएं मिल कर एक हो गईं हैं। उनका आकार एक भयंकर राक्षसनुमा पक्षी में बदल गया है। देखते ही पॉल कोसोक का माथा चकराया। पर मारिया रीच ने अनुमान लगाया है कि कुछ अदृश्य शक्तियों का प्रभाव है, जिससे नाज्का के प्राचीन निवासी परिचित थे। मगर ये अदृश्य शक्तियां क्या हैं, कैसी हैं, इस संबंध में फिलहाल कुमारी रीच भी चुप हैं। दर्जनों पुरातत्ववेत्ता, भूगर्भशास्त्री मारिचा रीच के साथ खोज में लगे हुए हैं।

१५०० में स्पेन विजय के बाद इस प्रदेश में भयंकर रूप से प्लेग फैला, जिसमें अनेक जानें गईं। लूटपाट और उत्पात मचाने वाली स्पेनी कौम ने आदिवासियों के धार्मिक आध्यात्मिक स्थलों को नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। लूटने वालों ने अनगिनत कब्रें खोद डालीं और शव के साथ गाड़े गए बहुमूल्य कपड़े, सोने, चांदी के जेवर बर्तन और कलाकृतियां चुराकर ले गए। तब की प्रथा के अनुसार शव के साथ वे सारे सामान दफन किए जाते थे, जिनका इस्तेमाल मरने वाला जीवित अवस्था में करता था।

मारिया रीच का कहना है कि भारत के पूर्वज नापने के लिए ३८ सेमी लंबे एक रॉड का इस्तेमाल करते थे और उससे चाहे जिस किसी भी कोण से रेखा खींची जाती थी, उसका गुणनफल १५ के कोण के बराबर ही होता था।

रीच ने इन रेखाओं और आकृतियों को खगोलशास्त्रीय कैलेंडर भी माना है। खगोलविद और पुजारी सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्रों की गतिविधियों की जानकारी के लिए इन रेखाओं का इस्तेमाल करते थे। नक्षत्रों की गतिविधियों के आधार पर वर्षा, भूकंप अच्छी और बुरी फसलों पर्व त्यौहारों के विषय में भविष्यवाणी की जाती थी। कुछ सीधी रेखाएं बताती हैं कि २१ जून और २१ दिसंबर को सूर्योदय तथा सूर्यास्त कब और कहां होगा, ये दोनों तिथियां वर्ष में शुभ दिन मानी जाती थीं। मारिया रीच का अनुमान है कि ये रेखाएं इन्हीं दो तिथियों को खींची गई होंगी। इनकी दशा भी पूर्व से पश्चिम की है। सूर्य की गतिविधि जानने के लिए और भी रेखाएं प्रयुक्त होती होंगी, जिनकी दिशा उत्तर दक्षिण की ओर है। उर्ध्वमुखी रेखाओं का आरंभिक बिंदु चंद्रमा की ओर है जो बीच से और पीछे से आधी मुड़ी है।

ब्रिटेन के खगोलशास्त्री बेराल्ड एस हार्किस ने १९६८ में स्मिथसोनियन अध्ययन दल के साथ १८६ रखाओं पर कंप्यूटर का प्रयोग किया और पाया कि मात्र ३० रेखाएं ऐसी हैं जिनका मुंह पिछले ७००० वर्षों से सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्रों की ओर है।